राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

विषय - राजनीति विज्ञान (स्नातक प्रथम खंड प्रतिष्ठा)
पाठ - लोकतंत्र का अभिजनवादी सिद्धांत

डॉ० उमेश चन्द्र शुक्ला
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
राम रतन सिंह महाविद्यालय
मोकामा

सामान्य तौर पर लोकतंत्र का अर्थ ऐसी शासन व्यवस्था के रूप में बतलाया जाता है, जिसमें सभी लोगों की भागीदारी हो। इसकी नींव स्वतंत्रता और समानता बतलाई जाती है। अर्थात लोकतंत्र में किसी को विशिष्ट नहीं माना जाता है। कानून की दृष्टि से भी सभी समान होते हैं। अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र की शास्त्रीय परिभाषा देते हुए लिखा है, "Democracy is a government of the people, for the people and by the people." ब्राइस ने भी लिखा है, "लोकतंत्र शासन का वह प्रकार है जिसमें शासन की शक्ति किसी विशेष वर्ग या वर्गों में निहित न होकर सम्पूर्ण जन-समुदाय में निहित होती है।

वर्तमान समय में लोकतंत्र की इस अवधारणा को स्वीकार नहीं किया जाता है। आज मानवमात्र की प्राकृतिक असमानता एवं अन्य आधारों पर बतलाया जाता है कि लोकतंत्र सहित प्रत्येक शासन व्यवस्था में वास्तविक शासन की शक्ति एक विशिष्ट वर्ग में विद्यमान होता है, जिसे राजनीतिक अभिजन वर्ग कहा जाता है। डगलस वी० वर्नी ने इस दृष्टिकोण को और भी स्पष्ट करते हुए लिखा है, "कोई भी राजव्यवस्था अपने आपको लोकतांत्रिक बतलाने की चाहे कितनी ही चेष्टा क्यों न करे, उसके संगठन में वर्गवादी तत्व विद्यमान होते ही हैं। व्यक्ति सोच सकते हैं कि वे राजनीतिक प्रक्रिया में भाग ले रहे हैं लेकिन उसका प्रभाव चुनाव तक ही सीमित रहता है। सत्ता के केन्द्र पर एक सामाजिक विशिष्ट वर्ग होता है, जो नीति निर्माण एवं समस्त निर्णय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है।"

इस प्रकार अभिजन वर्ग का अर्थ है एक छोटा समूह, जिसके हाथों में शासन की समस्त शक्ति होती है। यह वर्ग आम लोगों से भिन्न होता है। अभिजन का अंग्रेजी शब्द Elite की उत्पत्ति Eligree से हुई है, जिसका अर्थ है श्रेष्ठता के आधार पर चयन।

Scanned with CamScanner

अभिजन वर्ग के सिद्धांत के प्रतिपादकों में पैरेटो, मोस्का, मिचेल्स, बर्नहाइम, सी राइट मिल्स, लासवेल, शुम्पीटर, टी० बी० बाटोमोर आदि हैं। इन विचारकों ने मनोवैज्ञानिक, संगठनात्मक, दलीय, संस्थागत, प्रबंधकीय आदि आधार पर लोकतंत्र जैसी व्यवस्था में भी अभिजनवादी दृष्टिकोण की पुष्टि की है। इसका विश्लेषण निम्न आधार पर किया जा सकता है —

(1) पैरेटो के दृष्टिकोण — पैरेटो ने अपनी पुस्तक, The Mind and Society में मानव की प्राकृतिक असमानता एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर बतलाया है कि व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अभिजन वर्ग एवं सामान्य वर्ग में विभक्त रहता है। अभिजन वर्ग के लोग अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक शारीरिक और बौद्धिक क्षमता के कारण अपने विशिष्ट पहचान बनाने में सफल रहते हैं। इसके अभाव में सामान्य वर्ग के लोग अपनी विशिष्ट पहचान में असफल रहते हैं। फलस्वरूप वे राजकीय दायित्वों के निर्वाह में भी पहुंच नहीं बना पाते हैं।

पैरेटो पुनः अभिजन वर्ग को शासकीय अभिजात वर्ग (Governing Elite) और गैर शासकीय अभिजन वर्ग (Non-governing Elite) में विभक्त करता है। पैरेटो दोनों को ही अभिजन वर्ग मानता है, किन्तु जहाँ शासकीय अभिजनवर्ग सत्ता पर आरूढ़ रहता है, वहीं गैर शासकीय अभिजनवर्ग सत्ता की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहता है। पैरेटो शासकीय अभिजन वर्ग के लिए सिंह (Lions तथा गैर शासकीय अभिजन वर्ग के लिए लोमड़ी (Foxes) शब्द का प्रयोग करता है। पैरेटो लोकतांत्रिक प्रक्रिया के आधार पर सत्ता पक्ष और विपक्ष की भूमिका के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि सत्ता पर नियंत्रण हमेशा अभिजन वर्ग का ही रहता है।

(2) मोस्का — मोस्का ने अपनी पुस्तक The Ruling Class में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि समाज में लोग शासक वर्ग (Rulers class) और शासित वर्ग (Ruled class) में विभाजित होते हैं। शासक वर्ग की संख्या काफी कम होती है किन्तु वे संगठित होते हैं। इसके विपरीत लोगों का बड़ा समूह

शासकीय दायित्व से अपने को अलग रखता है वह शासक नहीं बल्कि शासित ही रहना चाहता है। वह शासक बनने के लिए कोई प्रयास भी नहीं करता है। राजनीतिक परिवर्तन के दौर में वह किसी नेतृत्व के साथ दर्शकीय भूमिका का निर्वाह करता है। अर्थात नेतृत्व उसका उपयोग मात्र करता है। अतः परिवर्तन के दौर में भी सत्ता पर नियंत्रण किसी न किसी नेतृत्व का ही रहता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया भी इससे अछूता नहीं है।

3. **मिचेल्स** — मिचेल्स ने दलीय आधार पर लोकतंत्र में भी अभिजन वाद की अवधारणा की ... पुष्टि किया है। इसके लिए उन्होंने "अल्पतंत्र के लौह नियम" (Iron Law of Oligarchy) का प्रतिपादन किया है। मिचेल्स ने पुस्तक, The Political Party में वर्णन किया है कि अन्य संगठनों की तरह राजनीतिक दल का संगठन पिरामिड के समान होता है। संगठन में नीचे स्तर पर फैलाव होता है अर्थात कार्यकर्ताओं का समूह होता है। दलीय संगठन जैसे जैसे ऊपर की ओर बढ़ता है संख्या सीमित होती जाती है। चोटी पर कुछ लोगों का समूह रहता है, जो दल को नियंत्रण में रखता है। भारत में बोल-चाल की भाषा में इसे दलीय आलाकमान कहा जाता है। इस प्रकार मिचेल्स इस स्थापना का समर्थन करते हैं कि किसी भी दल की सरकार लोकतांत्रिक व्यवस्था में हो, दल का शीर्ष नेतृत्व अर्थात अभिजात वर्ग ही सत्ता पर नियंत्रण रखेगा।

4. **बर्नहाम** — बर्नहाम ने प्रबंधकीय आधार पर अभिजन वर्ग की अवधारणा का समर्थन किया है। उनके अनुसार लोकतांत्रिक, समाजवादी तथा साम्यवादी व्यवस्था में सत्ता संचालन के लिए प्रबंधकों (Managers) की आवश्यकता होती है। सरकारी, औद्योगिक, आर्थिक आदि अन्य क्षेत्रों के लिए प्रबंधकों की आवश्यकता पड़ती, वे अभिजन का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा सत्ता को नियंत्रित करते हैं। बर्नहाम ने अपनी पुस्तक The Managerial Society में लिखा है कि सत्ता पर वास्तविक नियंत्रण आम लोगों का नहीं बल्कि प्रबंधकों (Managers) अर्थात अभिजनों का होता है।

Scanned with CamScanner

5. **सी० राइट मिल्स** — सी० राइट मिल्स ने राजनीतिक अभिजन वर्ग के स्थान पर शक्ति अभिजन (Power Elite) शब्द का प्रयोग किया है। उनके अनुसार शक्ति अभिजन वे हैं जो आदेश देने वाले पदों पर कार्यरत हैं। वे राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, औद्योगिक, सैनिक, तथा प्रशासनिक, पदों पर रह सकते हैं। उन्होंने Power Elite को "who occupy the command posts" के रूप में परिभाषित किया है।

इस प्रकार अनेक विचारकों ने विविध आधारों पर यह समर्थन किया है कि लोकतंत्र में भी सत्ता में सहभागिता आम लोगों की नहीं बल्कि विशिष्ट वर्ग — अभिजन वर्ग की होती है। टी० बी० बोटोमोर ने भी अपनी पुस्तक Elites and society में अभिजन वर्ग पर विशद विवेचन के क्रम में उसकी विशेषताओं का उल्लेख किया है — यह एक छोटा सा संगठित वर्ग होता है, जिसका एकमात्र उद्देश्य सत्ता पर एकाधिकार स्थापित करना होता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संभावित खतरों, विरोधों तथा संगठित समूह से बचाव का रास्ता बनाता है।

प्रश्न यह है कि क्या अभिजन वर्ग की अवधारणा प्रजातंत्र विरोधी है। सच्चाई यह है कि प्रजातंत्र एक शासन व्यवस्था के रूप में बहुमत पर आधारित है। संख्या के आंकड़ों को बनाने और बिगाड़ने में नीतियाँ और आदर्श कमजोर पड़ जाते हैं। इसलिए अभिजन की प्रधानता बढ़ जाती है। अर्थात प्रजातंत्र की त्रुटियों का परिणाम अभिजन के वर्चस्व के रूप में देखने को मिलता है। ब्रिटिश चांसलर लॉर्ड हेल्शाम ने कहा था, "अभिजन की अवहेलना लोकतंत्र का वास्तविक संकट है।" वर्तमान समय की यही वास्तविकता है।

Shukla